पचासवां साल और छठी यात्रा

अस्कोट–आराकोट अभियान 2024

मुख्य यात्राः पांगू–अस्कोट–आराकोटः 25 मई से 8 जुलाई 2024

अपने गाँवों को हम जानें,
अपने लोगों को पहचानें।
तालों, गलों–बुग्यालों के संग,
अपनी नदियों को भी समझें।

आज से 50 साल पहले 25 मई से 8 जुलाई 1974 के बीच नव स्थापित कुमाऊँ तथा गढ़वाल विश्वविद्यालयों के छात्रों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा ग्रामीणों ने उत्तराखण्ड के पूर्वी कोने पर नेपाल सीमा पर स्थित **अस्कोट** (जिला पिथौरागढ़) से पश्चिमी कोने में हिमाचल से लगी सीमा पर स्थित **आराकोट** (जिला उत्तरकाशी) तक की अध्ययन यात्रा की थी। इस यात्रा के लिए **श्री सुंदरलाल बहुगुणा** ने उन्हें प्रेरित किया था। संग्रामी श्रीदेव सुमन के जन्मदिन 25 मई को यात्रा शुरू हुई। यात्रा के माध्यम से पहली बार दूरस्थ–दुर्गम उत्तराखण्ड का आँखों देखा यथार्थ व्यापक रूप से सामने आया था। 1974 से 1984 के बीच अभियान अन्य मार्गों में गया। 1975 में श्रीनगर से शिमला, 1976 में अलमोड़ा से श्रीनगर तथा 1977 में नैनीताल से गोपेश्वर यात्रा की गई।

दस साल बाद '**पहाड़**' तथा सहयोगी संस्थाओं ने तय किया की 25 मई से 8 जुलाई 1984 के बीच एक बार फिर उन्हीं तिथियों और उसी मार्ग से यात्रा कर एक दशक में हुए परिवर्तनों को समझने की कोशिश की जाय। यात्रा को और विस्तार दिया गया। पांगू से अस्कोट; वान से रामणी, झिन्झी, पाणा, कुंवारी पास, ढाक तपोवन–रेणी, जोशीमठ होकर गोपेश्वर; घुत्तू–बूढ़ाकेदार–उत्तरकाशी आदि नए स्थान और मार्ग इसमें जोड़े गए। इस बार कुछ साथियों ने कोटद्वार से कर्णप्रयाग और अलमोड़ा से श्रीनगर की भी अध्ययन यात्रा की। 1984 से 1994 के बीच उत्तराखण्ड के भीतर तथा अन्य **हिमालयी राज्यों** (जम्मू–कश्मीर, हिमाचल, सिक्किम, अरुणाचल) तथा **देशों** (नेपाल, भूटान, तथा तिब्बत आदि) में भी यात्राएं की गईं।

25 मई से 8 जुलाई 1994 के बीच पहाड़ द्वारा **तीसरा अस्कोट आराकोट अभियान** आयोजित हुआ। इस बार कुमाऊँ तथा गढ़वाल विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ अन्य अनेक संस्थाओं (दसौली ग्राम स्वराज्य मण्डल, हेस्को, हार्क, डाल्यों का दगड्या, प्रगतिशील महिला मंच, उत्तराखण्ड जन जागृति संस्थान) ने भी इस अभियान के अन्तर्गत अलग–अलग क्षेत्रों में अध्ययन यात्राएँ की। इसी तरह 2004 में **चौथा** और 2014 में **पांचवां** अस्कोट आराकोट अभियान आयोजित हुआ।

2014 में आयोजित पांचवां अस्कोट आराकोट अभियान स्वतन्त्रता सेनानी **श्रीदेव सुमन** के जन्मदिवस 25 मई को पांगू (पिथौरागढ़) से **श्री चंडी प्रसाद भट्ट** द्वारा रवाना किया गया। उन्होंने इस यात्रा को 'जंगम विश्वविद्यालय' नाम दिया। अमरीका, कनाड़ा और जर्मनी से आए शोधार्थियों, प्राध्यापकों समेत भारत के 8

राज्यों के लगभग 200 से अधिक लोगों ने अभियान में हिस्सेदारी की थी। और अब 2024 में सम्पन्न होगी छठी यात्रा। यह इस अभियान का **पचासवां साल** भी है।

पिछले पाँच दशकों में और खास कर राज्य बनने के ढाई दशक बाद उत्तराखण्ड का प्राकृतिक चेहरा–जल जंगल जमीन, खनन, बाँध, सड़क आदि के बहाने–कितना और घटा है? अर्थ व्यवस्था किस बिन्दु पर है? दलित तथा अल्पसंख्यकों की स्थिति कैसी है? सामाजिक–राजनैतिक चेतना में कितना इजाफा हुआ है? आर्थिक और सांस्कृतिक घुसपैठ कितनी बढ़ी है? पलायन का क्या रूप है? गाँव के हाल कितना बदले हैं? शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, पानी, शराब, विभिन्न आपदाओं तथा महिलाओं–बच्चों सहित पर्वतीय जीवन के अन्य पक्षों की क्या स्थिति है, यह सब जानने–समझने के लिए **25 मई–8 जुलाई 2024** के बीच **छठा अस्कोट– आराकोट अभियान** का पहला चरण अधिक व्यापक रूप से आयोजित किया जा रहा है। इस बार अभियान की केंद्रीय विषयवस्तु या थीम **'स्रोत से संगम'** रखी गई है ताकि नदियों से समाज के रिश्ते को गहराई और समग्र जलागम के संदर्भ में समझा जा सके। साल के अंतिम महीनों में **टनकपुर से डाकपत्थर (तराई–भाबर–दून) यात्रा** को अभियान के दूसरे चरण के रूप में आयोजित करने की योजना है।

इस अभियान के माध्यम से लोगों से सीखने और अपने अनुभवों तथा 'आज की असलियत' को लोगों तक पहुँचाने की दोतरफा कोशिश होगी। यह अभियान दल के सदस्यों के शिक्षित होने की प्रक्रिया के साथ लोक शिक्षण का भी महत्वपूर्ण कार्य होगा, जिसके अन्तर्गत मिट्टी, पेड़, पानी, बाँध तथा आपदा विस्थापितों की दशा, वन्यजीवन, खनिज, स्वास्थ्य–सफाई, सड़क, शिक्षा, कुटीर उद्योग, नशा, पर्यटन, प्राकृतिक संसाधनों में सिमटाव, नई आर्थिक नीति, उदारीकरण, पहाड़ों में शराब का अंतहीन विस्तार, कैंसर और एड्स जैसे विभिन्न रोगों के साथ कोविड से उत्पन्न हुई स्थितियों के समझने तथा गैर सरकारी संस्थाओं की भूमिका जैसे तमाम विषयों की पड़ताल होगी और इन विषयों पर केन्द्रित बातचीत लोगों से होगी।

इस बार हम यह पड़ताल भी करेंगे कि नये राज्य की स्थापना के ढाई दशक बाद क्या स्थिति बनी है। लम्बे आन्दोलन और कुर्बानियों के बाद हासिल हुए नए राज्य में लोगों की आकांक्षाओं का क्या हुआ, क्या उन्हें उनके हिस्से का लोकतंत्र और विकास नसीब हुआ है, बातचीत के मुख्य बिन्दुओं में होगा।

जल, जंगल तथा जमीन के मामले के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय ऋणों से खड़ी की गयी योजनाओं की भी पड़ताल होगी और विभिन्न संसाधनों को राज्य द्वारा अपने हाथों में ले लिये जाने को गम्भीरता से समझने का प्रयास होगा। नई आर्थिक नीति तथा उदारीकरण के प्रभावों के साथ साथ उत्तराखण्ड की जैविक विविधता तथा पारम्परिक ज्ञान की पड़ताल होगी। माफिया की बढ़ती शक्ति, भ्रष्टाचार तथा सामाजिक अपराध जैसे पक्ष भी देखे जायेंगे। चिपको, नशा नहीं रोजगार दो, हिमालय बचाओ, पृथक उत्तराखण्ड राज्य, गैरसैण में राजधानी स्थापना तथा बेरोजगारों के आन्दोलन के प्रभाव तथा उनमें जन हिस्सेदारी के स्वरूप को समझने तथा गैर सरकारी संस्थाओं के योगदान की समीक्षा का प्रयास भी होगा। एक प्रकार से इस अभियान द्वारा सामान्यतया उत्तराखण्ड की पिछले पाँच दशकों की और विशेष रूप से पिछले ढाई दशकों की समग्र स्थिति का निर्मम सिंहावलोकन होगा।

इस बार यात्रा की एक और विशेषता है कुछ ऐसे मार्गों में यात्रा करना, जिनमें हुई महत्वपूर्ण यात्राओं का विवरण उपलब्ध है। जैसे **श्वेन त्सांङ** (ह्वेनसांग) की सातवीं सदी के पूर्वार्ध की कालसी–गोविषाण (काशीपुर) यात्रा, **आन्द्रादे** आदि जैसुइट पादरियों की 1624 की हरद्वार–माणा–छपरांग यात्रा, **डैनियल चाचा–भतीजे** की 1789 की नजीबाबाद से प्रारम्भ गढ़वाल यात्रा, **थामस हार्डविक** की 1796

की कोटद्वार–श्रीनगर यात्रा, **बिशप हेबर** की 1824 की कुमाऊँ यात्रा, **पिलग्रिम** (पी. बैरन) की 1839–1842 की उत्तराखण्ड यात्रा, **पण्डित नैनसिंह रावत** तथा **स्वामी विवेकानन्द** के कुछ यात्रा मार्ग, **लार्ड कर्जन** की 1903 की नैनीताल–रामणी (इसे कर्जन मार्ग कहा जाता है) यात्रा तथा भूगर्भशास्त्री **हीम** तथा **गानसीर** की 1936 की यात्रा आदि शामिल हैं।

अभियान में उत्तराखण्ड की विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ता; विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा उत्तराखण्ड–हिमाचल के इण्टर कालेजों–हाईस्कूलों के शोधार्थी–विद्यार्थी, प्राध्यापक, पत्रकार, लेखक, रंगकर्मी, वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक, सामाजिक–राजनैतिक कार्यकर्ता और देश के अन्य हिमालयप्रेमी भी शिरकत करेंगे। यात्रा अनेक टोलियों में अनेक मार्गों में सम्पन्न होगी।

यात्रा के बाद अभियान के समस्त सदस्यों का सम्मेलन करने का भी विचार है। यात्री इस सम्मेलन में अपने अनुभव रखेंगे। शब्दों में और लिखित भी। हर यात्रा दल तब अपनी रपट, फोटो, स्लाईड्स प्रस्तुत करेगा। अतः हर सदस्य को व्यक्तिगत डायरी, नोट्स, स्केच, फोटो के माध्यम से उत्तराखण्ड की असलियत प्रस्तुत करने हेतु तैयारी करनी होगी। **पहाड़** ने एक सर्वेक्षण प्रश्नावली तैयार की है। इसे हम ऑनलाइन भी उपलब्ध कराने की कोशिश कर रहे हैं ताकि विभिन्न गाँवों तथा क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जा सके। पिछले पचास सालों की आँखनदेखी से हम एक जनोपयोगी तथा क्षेत्रोपयोगी रपट तैयार कर सकेंगे।

विभिन्न अभियान दलों में पूरी या आंशिक हिस्सेदारी के लिए हर उस साथी का स्वागत है, जो पहाड़ की जिन्दगी जानने और उसमें सकारात्मक परिवर्तन करने या ठहराव तोड़ने में रुचि रखता हो और जनचेतना के विकास को महत्व देता हो। यात्रा में मनोरंजन अथवा सैर–सपाटे का भाव नहीं है। यात्रा को अधिकतम जनाधारित बनाने का पूर्ववत् प्रयास होगा। अभियान दल के सदस्य के पास पिट्ठू, स्लीपिंग बैग, एक प्लेट, पानी की बोतल, जरूरी कपड़े (कुछ ऊनी भी), डायरी, कापी, कलम अवश्य हो। कैमरा, टेप रिकार्डर, तथा हैंड माइक (चेलेंजर) की व्यवस्था हर दल में हो सके तो अच्छा होगा। जैसा कि हमने आग्रह किया है, जिसकी इस अभियान में रुचि है तथा मदद की इच्छा है वे कृपा कर जरूरी दवाएँ, हैंड माइक आदि भेज सकते हैं। आप आर्थिक सहयोग कर सकते हैं। यह या **पहाड़** का कोई भी अभियान प्रोजेक्ट आधारित नहीं होता है। अतः हम **पहाड़** के सदस्यों और शुभचिन्तकों से हर तरह की मदद चाहेंगे। सहयोग का विवरण पहाड़ की ओर से जारी किया जायेगा। अपनी संस्था के आस–पास के ग्रामीणों, युवाओं को अपने क्षेत्र में यात्रा करने या उक्त अभियानों में शामिल होने को प्रेरित–प्रोत्साहित करें। विभिन्न अभियान दलों हेतु संलग्न पतों पर पत्राचार करें। (संलग्न)

25 मई 2024 को पांगू से यात्रा प्रारम्भ होगी और 8 जुलाई 2024 को आराकोट में समाप्त होगी। अभियान के सदस्य 6 जिलों– पिथौरागढ़, बागेश्वर, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी, उत्तरकाशी तथा देहरादून– के लगभग 350 गाँवों में प्रत्यक्ष जायेंगे। 35 नदियों, 16 बुग्यालों–दर्रों, 20 खरकों, भूकंप और भूस्खलन से प्रभावित क्रमशः 15 क्षेत्रों और अनेक घाटियों, 15 उजड़ी चट्टियों, चिपको आन्दोलन के 8 क्षेत्रों, 5 जनजातीय क्षेत्रों, 5 तीर्थयात्रा मार्गों और 3 भारत–तिब्बत मार्गो से गुजरने वाली पदयात्रा लगभग 1150 किमी. की होगी और इसमें 45 दिन लगेंगे।

पिछले कुछ वर्षों में पिथौरागढ़ के मित्रों ने काली तथा सरयू घाटियों में; **मुनस्यारी** के मित्रों ने गोरी, काली तथा धौली के ऊपरी जलागम क्षेत्रों में; **बागेश्वर** के मित्रों ने पंचेश्वर से सरगमूल; **'डाल्यूं का दगड़िया'** ने चाँदपुर गढ़ी–देवलगढ़–श्रीनगर–कीर्तिनगर–टिहरी और प्रतापनगर मार्ग में; **गोपेश्वर** के युवाओं,

दसौली ग्राम स्वराज्य मंडल गोपेश्वर, तथा **विभिन्न महिला मंगल दलों** ने चमोली जिले तथा अलकनंदा घाटी में विस्तृत यात्राए कीं। इस बार फरवरी 2024 में **हितैषी संस्था** ने गरुड़ गंगा घाटी में पदयात्रा आयोजित की है। मार्च.अप्रैल 24 में **रुद्रप्रयाग** के मित्र उस क्षेत्र में यात्रा कर रहे हैं। **जन मैत्री संगठन, रामगढ़** के साथी अप्रैल मे पर्वतगाड़ और रामगाड़ के किनारे पदयात्रा आयोजित कर रहे हैं। **उत्तराखण्ड जन जागृति संस्थान, जाजल (टिहरी)** ने हेंवल नदी घाटी में पदयात्रा करने का निर्णय लिया है। **अर्पण संस्था, अस्कोट** के साथी अपने आसपास के इलाकों में पदयात्रा आयोजित करने को सक्रिय हैं। **देहरादून** के साथी 2014 की तरह **रिस्पना** पदयात्रा करेंगे। इसी तरह **हिमल प्रकृति** आदि संस्थाओं से जुड़े साथी मिलम गल से जौलजीबी पदयात्रा का विचार कर रहे है। अन्य मार्गों की यात्राओं का विवरण देते रहेंगे।

आइये इस अभियान में हिस्सेदारी करें। अपनी जड़ों की ओर लौटने में हिचक कैसी?

'आस्ते भग आसीनस्य ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भगः
चरैवेति चरैवेति!'
—ऐतरेय ब्राह्मण 3/1/3

(बैठे का भाग्य बैठा हुआ। खड़े का भाग्य खड़ा। सोने वाले का भाग्य सोया हुआ और भ्रमणशील सदा आगे बढ़ता है। अतः चलते रहो, चलते रहो।)